B.A Part-2 Psy Paper-3 Group:A(Research Methodology) by Dr. Prabha Shree (Guest Faculty Psychology deptt Vaishali Mahila College Hajipur) class Date- 28.05.2020

प्रश्नावली विधि की गुण तथा परिसीमाएँ

(Advantage and Limitations of Questionnaire Method)

<u>प्रश्नावली विधि के गुण:-</u>

1. **विशाल तथा व्यापक समष्टि के अध्ययन की सुगमता (facility for the study of vast and wide universe)-** प्रश्नावली द्वारा अध्ययन में सूचनादाताओं से संपर्क डाक सेवा के माध्यम से भी किया जाता है अतः इससे व्यापक तथा ऐसे क्षेत्रों के अध्ययन में भी सुविधा व सुगमता होती है जो कि

भौगोलिक दृष्टि से सामान्यतः दूरस्थ तथा पहुंच के बाहर रहते हैं।

2. **उत्तरों की गोपनीयता पर अधिक विश्वास की मात्रा (greater confidence in the secrecy of responses)-** प्रश्नावली में यदि उत्तरदाता से उसका नाम न पूछा जाए, तो उसे इस बात का अधिक विश्वास रहता है कि उसके द्वारा दिए गए उत्तर गोपनीय बने रहेंगे। गोपनीयता के प्रति अधिक विश्वास के कारण प्रश्नावली विधि में उत्तरदाता अधिक मुक्त रूप से प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए तत्पर रहता सकता है । जिससे उत्तरों के सत्यापन की संभावना बढ़ जाती है।

3. **अध्ययन में कम समय व लागत (list time and money in study)-** प्रश्नावली द्वारा अध्ययन में अपेक्षाकृत बहुत कम समय व लागत लगता है क्योंकि सूचनादाता से व्यक्तिगत संपर्क के स्थान पर डाक सेवा से संपर्क करना भी संभव है जिससे वेतन, यात्रा, भत्ते व दैनिक भत्ते के खर्चे के स्थान पर केवल डाक सेवा पर ही नाम मात्र व्यय होता है साथ ही इससे अपेक्षाकृत अतिशीघ्र परिणाम उपलब्ध हो जाते हैं।

4. **अध्ययन की वस्तुपरकता (Objectivity in study)-** प्रश्नावली द्वारा अध्ययन का मुख्य आधार प्रायः प्रतिबंधित व अप्रतिबंधित प्रश्न होते हैं तथा ऐसे प्रश्नों के उत्तर देने के लिए प्रश्नावली में कुछ आवश्यक निर्देश व

टिप्पणियां भी रहते हैं या फिर केवल नगण्य ही रह जाती हैं। प्रश्नों की ऐसी संरचना तथा उत्तर देने की ऐसी स्थिति में अध्ययन के स्वरूप में निश्चिततः वस्तुपरता अपेक्षित रहती है।

5. **प्रश्नों की विविधता (variety of questions)-** प्रश्नावली के प्रश्नों का स्वरूप प्रायः विविध प्रकार का होता है। इसके कुछ प्रश्न प्रायः open indeed , close ended आदि प्रकार के होते हैं इनके विविधता से अध्ययन को विशिष्ट तथा विभिन्न रूप प्रदान होता है।

6. **सांख्यिकीय अभिक्रिया के विशिष्ट सुविधा (specific convenience in statistical treatment)-** प्रश्नावली द्वारा प्राप्त प्रदत्त

सामग्री का स्वरूप अधिकांशतः वस्तुपरक रहता है और ऐसे आंकड़ों के व्यवस्थापन, सारणीयन, विश्लेषण तथा विवेचन में निश्चित तथा विशिष्ट सुविधा सुलभ रहती है।

7. **अध्ययन की विशिष्ट सुविधा (specific convenience in Study)-** प्रश्नावली द्वारा अध्ययन का प्रक्रम अपेक्षाकृत अधिक सरल व विशेष रूप से सुविधाजनक रहता है। जब कभी एक अध्ययन में अन्य अनुसंधान उपकरणों के उपयोग में अधिक कठिनाई रहती है, उस स्थिति में प्रश्नावली द्वारा अध्ययन में सामान्यतः विशिष्ट सुविधा रहती है।

8. **अध्ययन की निष्पक्षता (unbiased Study)-** प्रश्नावली द्वारा अध्ययन में उत्तरदाता जब प्रश्नों के उत्तर देता है तब अध्ययनकर्ता उसके सामने नहीं रहता है। इससे उत्तरों की प्रकृति अअध्ययकर्ता के अनुपस्थिति के कारण निष्पक्ष रहती है। प्रश्नावली द्वारा अध्ययन में निष्पक्ष उत्तर प्राप्त होने के अन्य कारक हैं- सूचनादाता अपनी सुविधा अनुसार तथा अपनी इच्छा अनुसार उत्तर देता है। ऐसी स्थिति में सूचनादाता सोच-विचार कर उत्तर देता है। ऐसी स्थिति संवेग रहित तथा निष्पक्ष उत्तर के लिए अनुकूल रहती है। अध्ययनकर्ता की उपस्थिति से उत्पन्न मनोवैज्ञानिक दबाव से छुटकारा रहता है। ऐसे अध्ययन में

सूचनादाता के परिचय की गोपनीयता भी साध्य रहती है।

<u>प्रश्नावली विधि की परिसीमाएं:-</u>

1. **केवल उच्च स्तर के शिक्षित व्यक्तियों का अध्ययन (Study of only highly educated persons)-** प्रश्नावली विधि का प्रयोग केवल उच्च स्तर के शिक्षित व्यक्तियों पर ही किया जा सकता है। अशिक्षित व्यक्तियों पर इसका प्रयोग संभव नहीं है। साथ ही प्रश्नावली को भरने के लिए पर्याप्त शिक्षा की आवश्यकता होती है अतः इसके अध्ययन का क्षेत्र पर्याप्त संकुचित होता है।

2. पक्षपातपूर्ण प्रतिचयन (biased selection)- प्रश्नावली द्वारा प्रतिदर्श के पक्षपातपूर्ण रहने के दो कारण है पहला जब अध्ययन में केवल उच्च स्तर के शिक्षित व्यक्तियों को ही सम्मिलित किया जा सकता है, तब इससे अध्ययन अपनी समष्टि का पूर्णतः प्रतिनिधित्व नहीं कर पाता है। दूसरा, यदि उच्च स्तर के शिक्षित व्यक्तियों का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन के आधार पर किया भी जाता है तब भी प्रतिदर्श का स्वरूप प्रतिनिध्यात्मक नहीं रहने पाता क्योंकि प्रश्नावली के उत्तर भरकर उसे लौटाने वालों की संख्या कम ही रहती है। अतः प्रश्नावली के कम लौटाने से

प्रतिदर्श का स्वरूप पक्षपातपूर्ण हो जाता है।

3. **सार्वभौमिक प्रश्नों की रचना में कठिनाई(difficulty in formulating universal question)-** प्रश्नावली का उपयोग प्रायः विस्तृत समष्टि के अध्ययन में किया जाता है, जिनमें विभिन्न भाषाओं वाले समूह सम्मिलित रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों के लिए एक भाषा में प्रश्नावली की रचना अनिवार्यतः अपर्याप्त रहती है। दूसरे विभिन्न शब्दों व पदों के विभिन्न स्थानीय क्षेत्रों में प्रायः विभिन्न अर्थ रहते हैं। अतः ऐसे सार्वभौमिक प्रश्नों की रचना करना अति

कठिन रहता है जिनका समस्त शिक्षित व्यक्ति एक समान अर्थ ही लगाएं।

4. **अधिकांश उत्तरों का अपर्याप्त रूप में उपलब्ध होना (mostly inadequate answers available)-** प्रश्नावली के द्वारा अध्ययन के अधिकतर अपर्याप्त उत्तर उपलब्ध होते हैं। इसके प्रायः कुछ कारण रहते हैं जैसे- प्रश्नों का कठोर रहना, प्रश्नों के अर्थ समझने में भाषा संबंधी कठिनाई, उत्तर देने में संवेगात्मक रस का अभाव, संकुचित व संक्षिप्त उत्तर, आधुनिक व्यक्ति का अति व्यस्त होना तथा विस्तृत लिखित जानकारी देने के प्रति उदासीन होना।

5. गहन तथा सतत अध्ययन के लिए अनुपयुक्त (inappropriate for intensive and continued study)- प्रश्नावली द्वारा अध्ययन का स्वरूप एक प्रकार से औपचारिक, अवैयक्तिक तथा यांत्रिक ही रहता है। इसमें व्यक्तिगत संपर्क तथा उत्तर देने में संवेगात्मक रसपान का अभाव रहता है। अतः इसके द्वारा गहन अध्ययन साध्य नहीं रहता है।

प्रश्नावली विधि के कुछ खास गुण एवं परिसीमाएं हैं। इन परिसीमाओं के बावजूद शोध में यह बहुतायत प्रयोग किया जाने वाला data

collection का एक अति महत्वपूर्ण विधि माना जाता है।